शिमला मिर्च की उन्नतशील खेती
कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 153–154

शिमला मिर्च की उन्नतशील खेती

प्रभाश कुमार शुक्ला[1], निमित सिंह[2], डॉ0 रमेश प्रताप सिंह[3] एवं डॉ0 मनोज कुमार मिश्रा[4]

[2](शोध छात्र) सब्जी विज्ञान विभाग,
[1](शोध छात्र) कृषि जीव रसायन विज्ञान विभाग,
[3]सहायक प्राध्यापक, कृषि जीव रसायन विज्ञान विभाग,
[1,2,3] आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229 (उ0प्र0)
[4]सहायक प्राध्यापक, संखियिकी विभाग,
संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा (उ0प्र0), भारत।

Email Id: shuklaprabhas1997@gmail.com

भारतवर्ष में शिमला मिर्च की व्यावसायिक खेती हिमांचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में की जाती है। इसे ग्रीन पेपर या वेल पेपर या मीठी मिर्च के नाम से भी जाना जाता है। इसमें तीखापन नहीं होता है अथवा बहुत कम होता है। शिमला मिर्च में विटामिन सी तथा खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

जलवायु

शिमला मिर्च ठंडी जलवायु की फसल है, पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी रोपाई फरवरी से मई जून तक की जाती है। यदि रात्रि का तापमान 12 डिग्री सेन्टीग्रेट से नीचे चला जाये तो पौधों की वृद्धि एवं फलत पर बुरा असर पड़ता है। दिन का तापमान 26–28 डिग्री सेन्टीग्रट तथा रात्रि का 16–18 डिग्री सेन्टीग्रेट शिमला मिर्च में फूल तथा फल आने के लिए बहुत ही अनुकूल होता है।

उन्नत किस्में

सामान्य किस्में

केलिफोर्निया वान्डर, बुलनोल यलोवन्डर, निशान्त–1, अर्का गौरव, अर्का बसन्त, अर्का मोहिनी।

संकर किस्में

भारत, इन्दिरा, पूसा दीप्ती अनुपन, अर्का अतुल्या, हीरा, सुप्रिया ओरोविले, तन्वी, तन्वी प्लस, नताशा, स्वर्णा।

भूमि एवं उसकी तैयारी

बलुई दोमट मृदा जिसका पी.एन.मान 55–6.8 के बीच हो सर्वोत्तम माना जाता है। खेत की 2–3 जुताई करके पाटा लगा देते हैं। जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाए।

बीज की मात्रा, बुआई तथा रोपाई का समय

एक हैक्टर खेत की रोपाई के लिए सामान्य किस्में की 800–1000 ग्राम तथा संकर किस्मों की 250–500 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। शिमला मिर्च के बीज की बुवाई मिर्च की ही भांति की जाती है। नर्सरी में पौधे जब 30 दिन के हो जाये और उसमें 4–5 पत्तियां आ जाए तो रोपाई कर देनी चाहिए।

रोपाई का ढंग

शिमला मिर्च की रोपाई किस्मों के आधार पर 45–60 X 30–45 सेमी. की दूरी पर करनी चाहिए।

खाद एवं उवर्तरक

200 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद प्रति हैक्टर की दर से खेत में अच्छी प्रकार मिला लें। इसके अलावा 100–200 कि.ग्रा. नत्रजन, 50–60 कि.ग्रा.

फास्फोरस तथा 50–60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर देना चाहिए।

संकर किस्मों के लिए 150 कि.ग्रा. नत्रजन 75 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 75 कि.ग्रा पोटाश प्रति हैक्टर देना आवश्यक होता है। नत्रजन की आधी तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के समय तथा शेष नत्रजन को दो बराबर भागों में बांटकर रोपाई के 30 व 45 दिन बाद खड़ी फसल में देना चाहिए।

सिंचाई

भूमि में पर्याप्त नमी अच्छी फसल के लिए आवश्यक है। अतः 10–15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

अगस्त में बोयी गयी फसल में 3–4 बार तथा नवम्बर में बोई गई फसल में दो बार 30–30 दिन पर निराई–गुड़ाई करनी चाहिए।

फसल की तुड़ाई एवं उपज

पूरी तरह से विकसित स्वस्थ फल बिक्री के लिए उपयुक्त रहते हैं। रोपाई के लगभग तीन माह बाद फलों की तुड़ाई शुरू हो जाती है। 4–5 तुड़ाई 10–15 दिन के अन्तर पर की जा सकती है। इसकी औसत पैदावार लगभग 100–300 कुन्तल प्रति हैक्टर होती है।

शिमला मिर्च के प्रमुख रोग व कीट

1. **डाईबैक एवं एन्थ्रेक्नोज :** 1. मिर्च की रोपाई अगस्त के दूसरे पखवाड़े में करने से एन्थ्रेक्नोज का संक्रमण बहुत कम हो जाता हैं। 2. बुवाई के पूर्व 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम/किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। 3. पौधशाला के पौधों पर रोपाई के पूर्व 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम/लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। 4. फूल आने के समय 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम/लीटर पानी, फिर 9 दिन बाद कॉपर आक्सीक्लोराइड की 3 ग्राम/लीटर पानी के घोल का पर्णीय छिड़काव करना चाहिए। 5. प्रथम फलत के मिर्चों को बीज के लिए कभी भी न रखें।
2. **जीवाणु पर्ण धब्बा :** 1. स्ट्रेप्टोसाइक्लीन दवा की 1 ग्राम मात्रा लगभग 6 लीटर पानी में घोलकर या कासुगामाइसीन 2 ग्राम/1 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
3. **स्क्लेरोटिनिया झुलसा (सफेद गलन) :** 1. कीचड़ की गई (पड़लिंग) धान के साथ फसल चक्र प्रारम्भिक रोगाणु की संख्या में कमी करने में सहायक है। 2. खेतों में हरी खाद को पलटने के बाद मिट्टी में ट्राइकोडर्मा पाउडर 5 कि.ग्रा./है0 की दर से बुरकाव करें। 3. पौधे की रोपाई सघन नहीं करना चाहिए जिससे पौधों के चारों तरफ नमी ज्यादा न बनी रहे और संक्रमण कम हो। 4. फूल आने की अवस्था में 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम/लीटर पानी की दर से तथा बाद में मैंकोजेब की 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से पर्णीय छिड़काव फूल आने के बाद करना चाहिए।
4. **पर्ण झुलसा :** 1. पहला छिड़काव क्लोरोथेनिल 2 ग्राम/लीटर पानी एवं पुनः 8–10 दिन के बाद दूसरा थायोफनेट मिथाइल की 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से करें। 2. पौधों की प्रतिरोधिता एवं बढ़वार अच्छी बनाए रखने हेतु ट्रिसेल 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से 10–12 दिन के अन्तराल पर पर्णीय छिड़काव करें।
5. **पर्णकुंचन विशाणु (गुरचा रोग):** 1. बीज को 2.5 मिली. इमिडाक्लोप्रिड/कि.ग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। सफेद मक्खी से बचाव हेतु पौधशाला को नाइलान जाली के अन्दर उगाना चाहिए। 3. पुष्पन अवस्था तक मेटासिस्टाक्स 1 मिली./लीटर पानी के घोल की दर से 10 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करें। 4. रोग सहनशील प्रजातियों जैसे पन्त सी 1, चन्चल एव के.ए.–2 को उगाना चाहिए।
6. **थ्रिप्स और माइट जनित गुरचा :** 1. बीज का शोधन इमिडाक्लोप्रिड दवा का 2.5 मिली./किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। 2. वर्टीमैक 0.8 मिली./लीटर पानी की दर से घोल कर 20 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। 3. डाईकोफाल 2.5 मिली. दवा एवं घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर एकान्तरित छिड़काव करते रहे।